International Journal of Home Science 2017; 3(1): 347-348

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2017; 3(1): 347-348
© 2017 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 14-11-2016
Accepted: 15-12-2016

डॉ. पारूल गुप्ता
पोस्ट डाक्टोरल फलोज बाई यूजीसी सरोजनी नायडू शास महा0 वि0 भोपाल

डॉ. अलका डेविड
ओ0 एस0 डी0 उच्च शिक्षा विभाग, भोपाल

Correspondence
डॉ. पारूल गुप्ता
पोस्ट डाक्टोरल फलोज बाई यूजीसी सरोजनी नायडू शास महा0 वि0 भोपाल

आदिवासी समाज की महिलाएंः बैगा जनजाति महिलाओं के जीवन शैली के विशेष संदर्भ में

डॉ. पारूल गुप्ता, डॉ. अलका डेविड

सारांश
नारी प्रकृति की निरन्तरता है तथा ईश्वर की अनुपम भेंट जिसे सम्पूर्ण मानव जाति के लिए जीवनदायिनी बनाया गया है। ममता, त्याग, वात्सल्य, कोमलता, आदि गुण उसमें स्वतः विकसित हुए हैं। ''प्रकृति ने उसके शरीर को अधिक सुकुमार नहीं बनाया वरन् उसे मनुष्य की जननी का पद देकर उसके हृदय में अधिक संवेदना, आँखों में अधिक आर्द्रता तथा स्वभाव में अधिक कोमलता भर दी है।'' नारी चाहे वो किसी भी समाज या वर्ग की हो वो जननी है अपने समाज के मूल्यों व विचारों को आगे बढ़ाती है। बैगा जनजाति की महिलाएं जो कि प्रकृति के अत्यन्त करीब रहती हैं। तथा उनकी अपने समाज में एक विशिष्ट छवि है। इसी विचार रुपी मन्थन के कारण उक्त शीर्षक ''आदिवासी समाज की महिलाएं'' (बैगा जनजातीय महिलाओं के जीवन शैली के विशेष संदर्भ में) रूपी शोध शीर्षक का चयन किया तथा परिणामों स्वरूप संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि बैगा जनजाति की महिलाओं के जीवन शैली में परिवर्तन पाया गया है।

कूट शब्दः जनजाति, महिलाएं

''यन नार्यस्ते पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः''
अर्थात जहाँ नारियों की पूजा होती है वहीं देवता का वास होता है। इन्हीं पक्तियों को उल्लेखित किया जाये तो कहा जा सकता है कि कोई भी समाज चाहे वो जनजातिय हो या उन्नत समाज यदि उस समाज के प्रगति का पता करना हो तो वहाँ के नारियों की स्थिति का अवलोकन करें। यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि आज देश का हर समाज व हर वर्ग नारियों के बढ़ते हुए कदम से अपने आपको शोभायमान कर रहा है और देश के हर वर्ग व हर समाज की स्त्री नित्यनयी बुलंदियों को प्राप्त कर रही है। नारियों को अपने आपको साहसिक बनने व आगे बढ़ने के लिए भी हमारी सरकार भी अनेक सुअवसरों को प्रदान कर रही है। जिससे नारियों के कदम अपनी बुलंदियों के शिखर को छू सकें।
भारत वर्ष का हृदयस्थली कहलाने वाला राज्य मध्यप्रदेश वैसे तो अपनी सांस्कृतिक भावनाओं से ओत–प्रोत होने के साथ जनजातीय बाहुल्य प्रदेश का भी दर्जा प्राप्त करता है। मध्यप्रदेश अपनी जनजातीय संस्कृति के कारण बहुत ही रंग–बिरंगी दिखता है। मध्यप्रदेश में 43 तरह के जनजातियों का वास है। लेकिन इनमें से 3 जनजातिया– बैगा, भारिया, सहारिया को भारत सरकार द्वारा घोषित तीन आदिम जाति समूह हैं।
आदिम जाति समूहों में एक बैगा जनजाति जो अपने आप को प्रकृति पुत्र कहलाता है। बैगा अपने आपको–प्रकृति के अत्यन्त सानिध्य में पाते हैं। ऐसा हो भी क्यों न क्योंकि बैगा आज भी जंगल व पहाड़ों के करीब ही अपना निवास स्थान रखते हैं। मध्यप्रदेश में इनकी जनसंख्या 414,526 है जिसमें कि महिलाओं की जनसंख्या–206,938 है। वैसे तो बैगा समाज पुरूष प्रधान समाज माना जाता है लेकिन स्त्रियों का अनादर पूरे बैगा समाज का अनादर माना जाता है।

उद्देश्यः– बैगा जनजातिय महिलाओं की जीवन शैली का अध्ययन

परिकल्पनाः– बैगा जनजातिय महिलाओं की जीवन शैली में परिवर्तन हो रहे हैं।

बैगा महिलाओं की कार्यशैलीः– बैगा समाज अपनी प्राचीन परम्पराओं व रूढ़ियों के लिए आबद्ध है।

बैगा समाज में महिलाओं की स्थिति एवं कार्यशैली विकसित समाज से भिन्न होती है। वे बच्चों का सम्हालना, घर को लीपने–पोतने का कार्य करती हैं। बैगा समाज में महिलाओं के लिए कोई कठोर सामाजिक बंधन नहीं है। आज के समय की बैगा महिलाएं अपने खेत खलिहान के कामों में हाथ बटाती हैं तथा वह भी पैसे के लिए छोटे–मोटे रोजगार व मजदूरी का काम करती हैं। बैगा महिलाएं घर बनाना आंगन को लीपने–पोतने का कार्य भी बड़ी प्रसन्नता से करती हैं। वर्तमान समय में बैगा महिलाएं घर के जरूरी सामान के लिए खुद ही बाजार जाती हैं। सरकार द्वारा चलायी जा रही है अनेक–तरह की योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर वे अपना भरण पोषण कर रही हैं।

श्रीमती मनीषा शुक्ला (2005) के अध्ययन बैगा महिलाओं की स्थिति–के अध्ययन के परिणामों में भी बताया गया है कि बैगा महिलाओं को कार्यशैली में परिवर्तन आ रहे हैं। वो अब हर काम में सहयोग प्रदान कर रही हैं।

बैगा महिलाओं का शैक्षिक स्तरः– जनगणना 2011 के अनुसार बैगा महिलाओं के शैक्षिक स्तर में बढ़त पायी गयी है। बैगा महिलाएं जहाँ पूर्व में पढ़ना लिखना नहीं जानती थी वहीं आज की बैगा महिलाएं पढ़ना–लिखना चाहती हैं उन्हें भली भाँति पता है कि पढ़ने लिखने से उन्हें नौकरी मिल सकती है बैगा महिलाएं अब अपने बच्चों को पढ़ने के लिए प्राथमिक पाठशाला में भेजने लगी हैं। जो कि अब हर गाँव में प्राथमिक पाठशाला खुल गये हैं। तथा यदि उनका बच्चा या बच्ची उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो वे बैगा अन्य स्कूलों व पोस्ट मैट्रिक छात्रावासों में बढ़ने के लिए भेजने लगे हैं। बैगा जनजाति का साक्षरता प्रतिशत 32.77 है।

सत्यप्रसाद भट्ट (2013) द्वारा किये गये अनुसन्धान ''बैगा जनजाति में निरन्तरता एवं परिवर्तन का एक नेतृत्वशास्त्रीय'' (मण्डला जिले के विशेष संदर्भ में)'' के परिणामों से भी इस वाक्य की पुष्टि होती है कि बैगा जनजातिय की महिलाओं पूर्व की अपेक्षा अब अपने तथा बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रयासरत् हैं। बैगा गाँव घुरकुरा व चाडा गाँव के बहुत बैगा परिवारों के बच्चे उच्च शिक्षित होकर नौकरियां कर रहे हैं।

बैगा महिलाओं का पहनावा व साजश्रृंगारः–बैगा महिलाएं जहाँ पूर्व में लुगरा, चौरवाना, बगरा, मूंगी एवं चगदरिया पहनती थीं वहीं आज इनका पहनावा पूरी तरह से बदल गया है। बैगा महिलाएं सिन्थेटिक साडियां व युवतियां सलवार कुर्ता में नजर आ रही हैं ऐसा हो भी क्यों न अब चौरवाना बुनने वाले बुनकर कम हो गये हैं तथा चौरवाना साडियों की कीमत भी बहुत हो गयी है इसलिए आज ये साडियां शादी–विवाह व विशेष उत्सवों तक ही सीमित हो गये हैं। बैगा गाँवों में लगने वाले हाट–बाजार में अवलोकन के उपरान्त भी यह पाया कि अब हाट–बाजार में हर तरह के कपड़े व्यापारी बेचने लगे हैं यहाँ तक अधोवस्त्र भी महिलाओं को खरीदते देखा। साज–श्रृंगार तो हर नारी का परम कर्तव्य है बैगा महिलाएं श्रृंगार प्रिय मानी जाती हैं। लेकिन परिवर्तन के इस बहती बयार ने उनके साज–श्रृंगार के वस्तुओं को भी बदल दिया है बैगा महिलाएं अब चूड़ी बिन्दी, सिन्दूर, क्लचर, क्लिप, पाउडर, क्रीम इत्यादि से अपने आप को श्रृंगारित कर रही हैं। बैगा महिलाओं में यह मान्यता है कि मरने के बाद उनका गोदना ही उनके साथ जाता है इसलिए वे पूरे शरीर ये गोदना गोदवाती हैं। तथा उनके माथे पर गुदा कपाल गुदाय ही उनके बैगा होने का पहचान था लेकिन आज की युवतियों जो स्कूल पढ़ने जाने लगी हैं वे गोदना नहीं गुदवा रही हैं। कहीं–कहीं सिर्फ महिलाएं कपाल गुदवा रही हैं तथा पूरे शरीर को नहीं गुदवा रही हैं। अब सिर्फ बुजुर्ग महिलाओं के शरीर पर ही गुदना गुदा दिख रहा है।

बैगा महिलाओं की धार्मिक व सांस्कृतिक मान्यताः–

बैगा जनजातिय महिलाओं के लिए अनेक निषेध बनाये गये हैं स्त्रियों के शव यात्रा में नहीं जाना, छानी न चढ़ना, हलन न चलाना, सेम की बेल महिलाओं द्वारा नहीं काटना इत्यादि। बैगा जनजाति में एक गांव में विवाह नहीं होता है। तथा लड़कियों को पूर्ण स्वतन्त्रता होती है अपना वर चुनने को जिसका सभी आदर करते हैं। तथा विवाह के पूर्व कन्या की इच्छा से यौन संबंध जायज है तथा ऐसा होने पर वे एक दूसरे के जीवन साथी हो जाते हैं। बैगा में लड़का –लड़की को एक ही दृष्टि से देखा जाता है प्रसव के तीन महीने तक पति–पत्नी से दूर रहता है। बैगा महिलाओं में जड़ी बूटी के प्रति अगाध प्रेम होता है तथा धर्म के प्रति इनकी गहरी आस्था होती है। वर्तमान समय में बैगा परिवर्तन देखने को प्राप्त हो रहा है। श्रीमती वर्मन इन्दिरा (2003) के अध्ययन बैगा जनजाति की महिलाएं एवं सामाजिक परिवर्तन के परिणामों से भी प्राप्त हुआ कि बैगा महिलाएं धर्म के प्रति गहरी आस्था रखती हैं। श्रीमती मनीषा शुक्ला (2005) के शोध परिणामों के अनुसार बैगा में पूर्व जन्म की आस्था पर अटूट विश्वास होता है।

बैगा महिलाओं का भोजनः–वैसे तो पूर्व में बैगा महिलाओं का मुख्य भोजन पेज तथा वन परिसर में उगने वाला, साग–भाजी कंदमूल जंगली फल इत्यादि बड़े चाव से खाते थे लेकिन वर्तमान समय में ये पेज के साथ–चावल–दाल, रोटी सब्जी इत्यादि भी खाने लगे हैं। इनके हाट बाजारों में मूँगफली, चाय, बिस्किट, नमकीन, समोसा, जलेबी, इत्यादि भी खाने को मिलती है जिसे बैगा महिलाएं खरीदती हैं। बैगा महिलाएं मांसाहारी तथा शाकाहारी दोनों होती हैं लेकिन उच्च बैगा महिलाएं शाकाहारी होती हैं मदिरा का सेवन इनमें आज भी देखने को प्राप्त हो रहा है। बैगा महिलाएं अब खाना खाने व रसोई में धातु के बर्तनों का उपयोग कर रहे हैं।

निष्कर्षः– शोध के उपरान्त निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बैगा महिलाओं की कार्यशैली में परिवर्तन आ गया है बैगा महिलाएं अब शिक्षा की तरफ बढ़ रही हैं। बैगा महिलाओं का साजश्रृंगार अब पुरानी पद्धति से नहीं हो रहा है तो अब गोदना भी नहीं गुदा रही हैं। ये अभी–भी अपने धर्म व संस्कृति के लिए आस्थावान है तथा खान पान में पुरानी पद्धति के अलावा नयी उपलब्ध खाद्य वस्तुओं का प्रयोग कर रही हैं।

संदर्भ सूचीः

1. डॉ. चौरसिया विजय (2004) प्रकृति पुत्र बैगा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल पृष्ठ संख्या 18,19,28,37,43,81
2. www.censu.co.in
3. श्रीमती शुक्ला मनीषा (2005) ''बैगा महिलाओं की स्थिति–एक अध्ययन'', बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल, पेज नं. 250–254
4. श्रीमती वर्मन इन्द्रिरा (2003) ''बैगा जनजाति को महिलाएं एवं सामाजिक परिवर्तन'', बरकातउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल पेज नं. 310–311
5. भट्ट सत्यप्रसाद (2013) ''बैगा जनजाति में निरन्तरता एवं परिवर्तन का एक नृतत्वशास्त्रीय अध्ययन'' (मण्डला जिले के विशेष संदर्भ में)
6. डॉ. तिवारी शिवकुमार, डा. श्रीकमल शर्मा, (2009), मध्यप्रदेश की जनजातियाँ समाज एवं व्यवस्था, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल पेज नं.– 14